**11th to16th April 2024**

# सत्य का असर समाचार पत्र

13,04,2024 jksingh, hardoi a gmail, com मोबाइल नंबर 9956834016

कानपुर वरिष्ठ पत्रकार जितेंद्र सिंह पटेल

## कानपुर राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में एक दिवयसीय इथेनाल उत्पादन विषय पर अखिल भारतीय संगोष्ठी का शुभारंभ



पत्रकार जितेंद्र सिंह पटेल

कानपुर राष्ट्रीय शर्करा संस्थान एवं शुगर टेक्नोलाजिस्ट एसोसियेशन आफ इंडिया (S.T.A.I.) के संयुक्त तत्वावधान में राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर में एक दिवयसीय समसामयिक एवं राष्ट्रीय महत्व के ज्वलंत विषय "वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इथेनाल उत्पादन की संवहनीयता" (Sustainability of Ethanol Production in Current Scenario) विषय पर एक अखिल भारतीय संगोष्ठी का शुभारंभ करते हुए संस्थान के निदेशक प्रो॰ डी स्वाइन व शुगर टेक्नोलाजिस्ट एसोसियेशन आफ इंडिया के अध्यक्ष संजय अवस्थी द्वारा दीप प्रज्वलन व माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संस्थान के निदेशक प्रो॰ डी स्वाइन ने कहा पेट्रोल के साथ इथेनॉल मिश्रण के लिए सरकार का दृढ़ प्रयास चीनी उद्योग के लिए गेम-चेंजर रहा है। 2025 तक पेट्रोल में 20% इथेनॉल मिश्रण प्राप्त करने की सरकार की प्रतिबद्धता ने इथेनॉल को एक मजबूत प्रोत्साहन प्रदान किया एवं बुनियादी ढाँचा तैयार किया और क्षमता वृद्धि में और निवेश को प्रोत्साहित किया। हालाँकि, आगे बढ़ते हुए कोई भी कृषि उत्पादन में आगे उतार-चढ़ाव, कृषि-जलवायु परिस्थितियाँ या मौसमी बदलाव उपलब्धता को प्रभावित कर सकते हैं । डॉ. सीमा परोहा आचार्य बायोकैमिस्ट्री ने कहा कि एक टन चुकंदर से 90 से 100 लीटर इथेनॉल प्राप्त किया जा सकता है। इसकी फसल महज पांच से छह माह में पककर तैयार हो जाती है। इसके अलावा गन्ने की अपेक्षा इसकी सिंचाई में 30 से 40 फीसद कम पानी लगता है। उत्तर भारत में इसकी बुवाई नवंबर माह में की जाती है जबकि अप्रैल माह में इसकी फसल को काट लिया जाता है। गन्ने के साथ भी इसकी खेती की जा सकती है। उन्होंने बताया कि इससे न केवल जरूरत के मुताबिक इथेनॉल का उत्पादन किया जा सकेगा बल्कि किसानों की आय दोगुना करने में भी इसकी खेती मददगार साबित होगी। संजय अवस्थी ने कहा कि 20 प्रतिशत का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए मक्के से इथेनॉल उत्पादन की प्रक्रिया तेज करने के लिए प्रयासो पे जोर दिया कार्यकर्म मुख्य रूप से अनुराग गोयल, किरण डंगवाल, टी गिरी कन्नन, संदीप चिचबंकर, स्वप्निल शर्मा, बीनू पैनिकर, सोरराज ससि, अरिषा श्रीवास्तव, रविश्रीनिवासनी आदि ने प्रमुख रूप से पेपर प्रस्तुत किया। एवं सहायक प्रोफेसर डॉ. अनंतलक्ष्मी ने मीठे ज्वार के महत्व पर प्रकाश डाला।कार्यकर्म के अंत में संयोजक डॉ सीमा परोहा ने देश विदेश के आगे समस्त प्रतिभागियो का धन्यवाद दिया|

## एक टन चुकंदर से 90 से 100 लीटर इथेनॉल बन सकता

# 2025 तक पेट्रोल में 20% इथेनॉल मिश्रण का प्लान है

डी टी एन एन। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर एवं शुगर टेक्नोलाजिस्ट एसोसियेशन आफ इंडिया के संयुक्त तत्वावधान में राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर में एक दिवसीय समसामयिक एवं राष्ट्रीय महत्व के ज्वलंत विषय 'वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इथेनाल उत्पादन की संवहनीयता' विषय पर एक अखिल भारतीय संगोष्ठी का शुभारंभ करते हुए संस्थान के निदेशक प्रो. डी स्वाइन व शुगर टेक्नोलाजिस्ट एसोसियेशन आफ इंडिया के अध्यक्ष संजय अवस्थी द्वारा दीप प्रज्वलन व माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संस्थान के निदेशक प्रो. डी स्वाइन ने कहा पेट्रोल के साथ इथेनॉल मिश्रण के लिए सरकार का दृढ़ प्रयास चीनी उद्योग के लिए गेम चेंजर रहा है। 2025 तक पेट्रोल में 20त्न इथेनॉल मिश्रण प्राप्त करने की सरकार की प्रतिबद्धता ने इथेनॉल को एक मजबूत प्रोत्साहन प्रदान किया एवं बुनियादी ढाँचा तैयार किया और क्षमता वृद्धि में और निवेश को प्रोत्साहित किया। हालाँकि, आगे बढ़ते हुए कोई भी कृषि उत्पादन में आगे उतार-चढ़ाव, कृषि जलवायु परिस्थितियाँ या मौसमी बदलाव उपलब्धता को प्रभावित कर सकते हैं । डॉ. सीना परोहा आचार्य बायोकैमिस्ट्री ने कहा कि एक टन चुकंदर से 90 से 100 लीटर इथेनॉल प्राप्त किया जा सकता है। इसकी फसल महज पांच से छह माह में पककर तैयार हो जाती है। इसके अलावा गन्ने की अपेक्षा इसकी सिंचाई में 30 से 40 फीसद कम पानी लगता है। उत्तर भारत में इसकी बुवाई नवंबर माह में की जाती है जबकि अप्रैल माह में इसकी फसल को काट लिया जाता है। गन्ने के साथ भी इसकी खेती की जा सकती है। उन्होंने बताया कि इससे न केवल जरूरत के मुताबिक इथेनॉल का उत्पादन किया जा सकेगा बल्कि किसानों की आय दोगुना करने में भी इसकी खेती मददगार साबित होगी। संजय अवस्थी ने कहा कि 20 प्रतिशत का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए मक्के से इथेनॉल उत्पादन की प्रक्रिया तेज करने के लिए प्रयासो पर जोर दिया कार्यकर्म मुख्य रुप से अनुराग गोयल, किरण डंगवाल, टी गिरी

कन्नन, संदीप चिचबंकर, स्वप्निल शर्मा, बीनू पैनिकर, सोरराज ससि, अरिषा श्रीवास्तव, रविश्रीनिवासनी आदि ने प्रमुख रूप से पेपर प्रस्तुत किया। एवं सहायक प्रोफेसर डॉ. अनंतलक्ष्मी ने मीठे ज्वार के महत्व पर प्रकाश डाला। कार्यकर्म के अंत में संयोजक डॉ सीमा परोहा ने देश विदेश के आगे समस्त प्रतिभागियो का धन्यवाद दिया।

**अमन यात्रा**

# पेट्रोल के साथ एथनॉल मिश्रण के लिए सरकार का प्रयास चीनी उद्योग का गेमचेन्जर: प्रोफेसर डी स्वाईन

## ○ वर्ष 2025 तक हम 20% एथनॉल मिश्रण का लक्ष्य प्राप्त कर लेंगे

सुशील त्रिवेदी

कानपुर। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर एवं शुगर टेक्नोलाजिस्ट एसोसियेशन आफ इंडिया के संयुक्त तत्वावधान में राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर में एक दिवसीय समसामयिक एवं राष्ट्रीय महत्व के ज्वलंत विषय वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इथेनाल उत्पादन की संवहनीयता- विषय पर एक अखिल भारतीय संगोष्ठी का शुभारंभ करते हुए संस्थान के निदेशक प्रो. डी स्वाइन व शुगर टेक्नोलाजिस्ट एसोसियेशन आफ इंडिया के अध्यक्ष संजय अवस्थी द्वारा दीप प्रज्वलन व माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संस्थान के निदेशक प्रो? डी स्वाइन ने कहा पेट्रोल के साथ इथेनॉल मिश्रण के लिए सरकार का दृढ़ प्रयास चीनी उद्योग के लिए गेम-चेंजर रहा है। 2025 तक पेट्रोल में 20ञ इथेनॉल मिश्रण प्राप्त करने की सरकार की प्रतिबद्धता ने इथेनॉल को एक मजबूत प्रोत्साहन प्रदान किया एवं बुनियादी ढाँचा तैयार किया और क्षमता वृद्धि में और निवेश को प्रोत्साहित किया। हालाँकि, आगे बढ़ते हुए कोई भी कृषि उत्पादन में आगे उतार-चढ़ाव, कृषि-जलवायु परिस्थितियाँ या मौसमी बदलाव उपलब्धता को प्रभावित कर सकते हैं। डॉ. सीमा परोहा आचार्य बायोकैमिस्ट्री ने कहा कि एक टन चुकंदर से 90 से 100 लीटर इथेनॉल प्राप्त किया जा सकता है। इसकी फसल महज पांच से छह माह में पककर तैयार हो जाती है। इसके अलावा गन्ने की अपेक्षा इसकी सिंचाई में 30 से 40 फीसद कम पानी लगता है। उत्तर भारत में इसकी बुवाई नवंबर माह में की जाती है जबकि अप्रैल माह में इसकी फसल को काट लिया जाता है। गन्ने के साथ भी इसकी खेती की जा सकती है। उन्होंने बताया कि इससे न केवल जरूरत के मुताबिक इथेनॉल का उत्पादन किया जा सकेगा बल्कि किसानों की आय दोगुना करने में भी इसकी खेती मददगार साबित होगी। संजय अवस्थी ने कहा कि 20 प्रतिशत का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए मक्के से इथेनॉल उत्पादन की प्रक्रिया तेज करने के लिए प्रयासों पे जोर दिया कार्यक्रम मुख्य रूप से अनुराग गोयल, किरण डंगवाल, टी गिरी कन्नन, संदीप चिचबंकर, स्वप्निल शर्मा, बीनू पैनिकर, सोराज सिंह, अरिषा श्रीवास्तव, रविश्रीनिवासनी आदि ने प्रमुख रूप से पेपर प्रस्तुत किया। एवं सहायक प्रोफेसर डॉ. अनंतलक्ष्मी ने मीठे ज्वार के महत्व पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम के अंत में संयोजक डॉ सीमा परोहा ने देश विदेश के आगे समस्त प्रतिभागियो का धन्यवाद दिया? इस दौरान अभिकल्पक अखिलेश कुमार पांडेय उपस्थित रहे।

**आज**

# मक्का और चुकंदर की फसलों को प्रोत्साहन की आवश्यकता, इथेनाल का लक्ष्य मिलेगा

## ❑ केंद्र सरकार का सन 2025 तक 20 फीसदी इथेनाल मिश्रण के लिए सरकार दृढ़ प्रयास

पत्रिका का विमोचन करते निदेशक प्रो.डी स्वाइन व अन्य।

कानपुर, 12 अप्रैल। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर एवं शुगर टेक्नोलाजिस्ट एसोसियेशन आफ इंडिया के संयुक्त तत्वावधान में राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में एक दिवसीय समसामयिक एवं राष्ट्रीय महत्व के ज्वलंत विषय वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इथेनाल उत्पादन की संवहनीयता विषय पर एक अखिल भारतीय संगोष्ठी का शुभारंभ करते हुए संस्थान के निदेशक प्रो.डी स्वाइन ने कहाकि पेट्रोल के साथ इथेनॉल मिश्रण के लिए सरकार का दृढ़ प्रयास चीनी उद्योग के लिए गेम-चेंजर रहा है। सन 2025 तक पेट्रोल में 20 प्रतिशत इथेनॉल मिश्रण प्राप्त करने की सरकार की प्रतिबद्धता ने इथेनॉल को एक मजबूत प्रोत्साहन प्रदान किया एवं बुनियादी ढाँचा तैयार किया और क्षमता वृद्धि में और निवेश को प्रोत्साहित किया। हालाँकि, आगे बढ़ते हुए कोई भी कृषि उत्पादन में आगे उतार-चढ़ाव, कृषि-जलवायु परिस्थितियाँ या मौसमी बदलाव उपलब्धता को प्रभावित कर सकते हैं। डॉ. सीमा परोहा ने कहा कि एक टन चुकंदर से 90 से 100 लीटर इथेनॉल प्राप्त किया जा सकता है। इसकी फसल महज पांच से छह माह में पककर तैयार हो जाती है। इसके अलावा गन्ने की अपेक्षा इसकी सिंचाई में 30 से 40 फीसद कम पानी लगता है। उत्तर भारत में इसकी बुवाई नवंबर माह में की जाती है जबकि अप्रैल माह में इसकी फसल को काट लिया जाता है। गन्ने के साथ भी इसकी खेती की जा सकती है। उन्होंने बताया कि इससे न केवल जरूरत के मुताबिक इथेनॉल का उत्पादन किया जा सकेगा बल्कि किसानों की आय दोगुना करने में भी इसकी खेती मददगार साबित होगी। शुगर टेक्नोलाजिस्ट एसोसियेशन आफ इंडिया के अध्यक्ष संजय अवस्थी ने कहा कि 20 प्रतिशत का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए मक्के से इथेनॉल उत्पादन की प्रक्रिया तेज करने के लिए प्रयासों पर जोर दिया। इस दौरान अनुराग गोयल, किरण डंगवाल, टी गिरी कन्नन, संदीप चिचबंकर, स्वप्निल शर्मा, बीनू पैनिकर, सोराज सिंह, अरिषा श्रीवास्तव, रवि श्रीनिवासनी आदि ने प्रमुख रूप से पेपर प्रस्तुत किया एवं सहायक प्रोफेसर डॉ. अनंतलक्ष्मी ने मीठे ज्वार के महत्व पर प्रकाश डाला।

## स्वतंत्र चेतना

# राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में अखिल भारतीय संगोष्ठी का हुआ शुभारंभ

चेतना समाचार सेवा

कानपुर। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर एवं शुगर टेक्नोलाजिस्ट एसोसियेशन आफ इंडिया के संयुक्त तत्वावधान में एक दिवयसीय समसामयिक एवं राष्ट्रीय महत्व के ज्वलंत विषय वर्तमान परिप्रेक्ष्य में इथेनाल उत्पादन की संवहनीयता विषय पर एक अखिल भारतीय संगोष्ठी का शुभारंभ करते हुए संस्थान के निदेशक प्रो॰ डी स्वाइन व शुगर टेक्नोलाजिस्ट एसोसियेशन आफ इंडिया के अध्यक्ष संजय अवस्थी द्वारा दीप प्रज्वलन व माँ सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण कर कार्यक्रम का शुभारम्भ किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए संस्थान के निदेशक प्रो॰ डी स्वाइन ने कहा पेट्रोल के साथ इथेनॉल मिश्रण के लिए सरकार का दृढ़ प्रयास चीनी उद्योग के लिए गेम-चेंजर रहा है। 2025 तक पेट्रोल में 20% इथेनॉल मिश्रण प्राप्त करने की सरकार की प्रतिबद्धता ने इथेनॉल को एक मजबूत प्रोत्साहन प्रदान किया एवं बुनियादी ढाँचा तैयार किया और क्षमता वृद्धि में और निवेश को प्रोत्साहित किया। हालाँकि, आगे बढ़ते हुए कोई भी कृषि उत्पादन में आगे उतार-चढ़ाव, कृषि-जलवायु परिस्थितियाँ या मौसमी बदलाव उपलब्धता को प्रभावित कर सकते हैं । डॉ. सीमा परोहा आचार्य बायोकैमिस्ट्री ने कहा कि एक टन चुकंदर से 90 से 100 लीटर इथेनॉल प्राप्त किया जा सकता है। इसकी फसल महज पांच से छह माह में पककर तैयार हो जाती है। इसके अलावा गन्ने की अपेक्षा इसकी सिंचाई में 30 से 40 फीसद कम पानी लगता है। उत्तर भारत में इसकी बुवाई नवंबर माह में की जाती है जबकि अप्रैल माह में इसकी फसल को काट लिया जाता है। गन्ने के साथ भी इसकी खेती की जा सकती है। उन्होंने बताया कि इससे न केवल जरूरत के मुताबिक इथेनॉल का उत्पादन किया जा सकेगा बल्कि किसानों की आय दोगुना करने में भी इसकी खेती मददगार साबित होगी। संजय अवस्थी ने कहा कि 20 प्रतिशत का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए मक्के से इथेनॉल उत्पादन की प्रक्रिया तेज करने के लिए प्रयासो पे जोर दिया कार्यकर्म मुख्य रूप से अनुराग गोयल, किरण डंगवाल, टी गिरी कन्नन, संदीप चिचबंकर, स्वप्निल शर्मा, बीनू पैनिकर, सोरराज ससि, अरिषा श्रीवास्तव, रविश्रीनिवासनी आदि ने प्रमुख रूप से पेपर प्रस्तुत किया। एवं सहायक प्रोफेसर डॉ. अनंतलक्ष्मी ने मीठे ज्वार के महत्व पर प्रकाश डाला।

## The Pioneer

# Seminar on sustainability of ethanol production

PIONEER NEWS SERVICE ■ KANPUR

An all India seminar on "Sustainability of Ethanol Production in the Present Scenario" was organised at the National Sugar Institute (NSI) here on Friday. The event was jointly organised by the NSI and Sugar Technologists' Association of India (STAI), New Delhi. Chief executive officers, general managers and senior level officials of sugar mills and distilleries located in major sugar producing states of the country participated in this seminar. In the inaugural session of the seminar, Director of the Institute Professor D Swain and President of STAI Sanjay Awasthi, Chief Executive Officer (CEO) of Radico Khaitan Group Amar Singh and Head of Department of Biochemistry Section Professor Seema Paroha, Alok Saxena (Executive Director-Gobind Sugar Mill) shared the stage. While addressing the seminar, Prof Swain explained how global warming can be reduced through balanced use of ethanol in petrol. Additionally, ethanol can be produced sustainably in India using various sugary, starchy and cellulosic non-food feedstocks. The government has decided to achieve the target of 20 per cent ethanol blending in petrol by 2025. The food situation in India has slowed down the production of ethanol, thereby limiting the ethanol blending programme. STAI president Sanjay Awasthi explained about the efficient process of producing ethanol from maize and the ethanol related policies of various states and central government. Veteran industrialist Amar Singh emphasised on sustainable production and profit making from production of ethanol at the distillery through various feedstocks. Professor of Biochemistry Dr Seema Paroha said the beetroot crop is ready in just five-six months and from one ton of beetroot 90-100 litres of ethanol can be obtained. Sugar beet is the best alternative crop to make India's E20 programme successful, creating a win-win situation for every stakeholder. She said this will not only help in producing ethanol as per requirement but its cultivation will also prove helpful in doubling the income of farmers. Eight pithy research papers were presented in the seminar on varieties of feed stock, economical process of production, various methods of energy saving, state and central government policies, zero liquid effluent (ZLD) in distillery effluent treatment process and environmental protection issues. The seminar discussed diverse issues and concluded that "alternative feedstock arrangements especially non-food feedstock and efficient production processes can sustain the Ethanol Blending Programme (EBP) and even accelerate it in the future".

Anurag Goyal, Dr Anant Lakshmi, Assistant Professor Biochemistry, Kiran Dangwal, T Giri Kannan, Sandeep Chichbankar, Swapnil Sharma, Binu Panicker, Suraj Sasi, Arisha Srivastava, Dr Ravi Srinivasan, Swapnil Sharma etc. discussed ethanol production as well as presented research papers related to increasing it.

अवध की आवाज (हिन्दी दैनिक) लखनऊ

# कानपुर राष्ट्रीय शर्करा संस्थान मे अखिल भारतीय संगोष्ठी का आयोजन

अवध की आवाज ब्यूरो

कानपुर। राष्ट्रीय शर्करा संस्थान कानपुर में वर्तमान परिदृश्य में एथेनॉल उत्पादन की स्थिरता पर एक अखिल भारतीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। इस संगोष्ठी में भारत के प्रमुख चीनी उत्पादक राज्यों में स्थित चीनी मिल ओं व आसमानियों के मुख्य कार्यकारी अधिकारी महाप्रबंधक और वरिष्ठ स्तर के अधिकारियों ने भाग लिया। संगोष्ठी के उद्घाटन सत्र में संस्थान के निदेशक प्रोफेसर दी स्वयं एवं शुगर टेक्नोलॉजिस्ट एसोसिएशन ऑफ इंडियन के अध्यक्ष श्री संजय अवस्थी रेडी को खेतान ग्रुप के मुख्य अधिकारी अधिकारी श्री अमर सिंह और जैव रसायन अनुभाग की विभक्ति अध्यक्ष प्रोफेसर डॉक्टर सीमा परोहा आलोक सक्सेना एग्जीक्यूटिव डायरेक्टर गोविंद शुगर मिल ने मंच साझा किया एस टी ए ए के अध्यक्ष श्री संजय अवस्थी ने मक्का से एथेनॉल के उत्पादन की कुशल भीम और विभिन्न राज्य और केंद्र सरकार की इथेनॉल से संबंधित नीतियों के बारे में बताया डॉक्टर सीमा परोहा प्रोफेसर जैव रसायन ने बताया कि चुकंदर की फसल मंत्र 5 से 6 माह में तैयार हो जाती है 1 तन चुकंदर से 90 से 100 लीटर एथेनॉल प्राप्त किया जा सकता है। सेमिनार में विविध मुद्दों पर चर्चा से या निष्कर्ष निकला वैकल्पिक फीड स्टॉक व्यवस्था विशेष रूप से गैर खाद्य फीड स्टॉक और कुशल उत्पादन प्रक्रिया इथेनॉल बेडिंग प्रोग्राम को सतत बन सकती है। संगोष्ठी में सी अनुराग गोयल डॉक्टर अनंत लक्ष्मी सह आचार्य जैव रसायन किरण डंगवाल तिगरी कन्नन संदीप विंच बनकर स्वप्निल शर्मा बिनु पाणिकर सूरज शशि उड़ीसा श्रीवास्तव डॉ रवि श्रीनिवास अन्य सम्मानित लोग उपस्थित रहे।

**अमर उजाला**

## 2025 तक पेट्रोल में 20 फीसदी इथेनॉल का करना है मिश्रण

कानपुर। पेट्रोल के साथ इथेनॉल मिश्रण के लिए सरकार का दृढ़ प्रयास चीनी उद्योग के लिए गेम-चेंजर रहा है। 2025 तक पेट्रोल में 20 फीसदी इथेनॉल का मिश्रण करना है। यह बात राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में शुगर टेक्नोलॉजिस्ट एसोसिएशन ऑफ इंडिया की ओर से हुई संगोष्ठी में संस्थान के निदेशक प्रो. डी स्वाइन ने कही।

संगोष्ठी का शुभारंभ निदेशक प्रो. डी स्वाइन व एसोसिएशन के अध्यक्ष संजय अवस्थी ने किया। डॉ. सीमा परोहा ने कहा कि एक टन चुकंदर से 90 से 100 लीटर इथेनॉल प्राप्त किया जा सकता है। इसकी फसल महज पांच से छह माह में पककर तैयार हो जाती है।

अवस्थी ने कहा कि 20 फीसदी के लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए मक्के से इथेनॉल उत्पादन की प्रक्रिया तेज करनी होगी। कार्यक्रम में कई शोध पत्र प्रस्तुत किए गए। सहायक प्रोफेसर डॉ. अनंतलक्ष्मी ने मीठे ज्वार के बारे में बताया। बता दें कि अभी पेट्रोल में 12 प्रतिशत इथेनॉल का प्रयोग होता है। (ब्यूरो)

एनएसआई में हुई गोष्ठी में शामिल सदस्य। संवाद

## अमृत विचार

# एक टन चुकंदर से सौ लीटर एथनॉल मिलेगा

कार्यालय संवाददाता, कानपुर

- राष्ट्रीय शर्करा संस्थान में विशेषज्ञों ने दी जानकारी
- पेट्रोल में 20 फीसदी एथनॉल के मिश्रण का लक्ष्य

**अमृत विचार।** राष्ट्रीय शर्करा संस्थान (एनएसआई) में शुक्रवार को शुगर टेक्नोलाजिस्ट एसोसियेशन ऑफ इंडिया के साथ एक दिनी राष्ट्रीय संगोष्ठी आयोजित हुई। "वर्तमान परिप्रेक्ष्य में एथेनॉल उत्पादन की संवहनीयता" विषय पर संगोष्ठी में विशेषज्ञों ने चुकंदर से एथनॉल तैयार करने की विधि को इस क्षेत्र में क्रांतिकारी कदम बताया। चुकंदर के प्रयोग और उसकी पैदावार पर भी चर्चा की गई। एक टन चुकंदर से सौ लीटर एथनॉल प्राप्त किया जा सकता है।

संगोष्ठी की शुरुआत संस्थान के निदेशक प्रो. डी स्वाइन व शुगर टेक्नोलाजिस्ट एसोसियेशन ऑफ इंडिया के अध्यक्ष संजय अवस्थी ने की। निदेशक प्रो. डी स्वाइन ने कहा कि 2025 तक पेट्रोल में 20 फीसदी एथनॉल के मिश्रण प्राप्त करने के सरकार के लक्ष्य ने एथनॉल को एक मजबूत प्रोत्साहन प्रदान किया है। बायोकेमिस्ट्री की आचार्य डॉ. सीमा परोहा ने बताया कि एक टन चुकंदर से 90 से सौ लीटर एथनॉल प्राप्त किया जा सकता है। इसकी फसल पांच से छह महीने में तैयार हो जाती है। गन्ने की अपेक्षा इसकी सिंचाई में 30 से 40 फीसदी कम पानी लगता है। गन्ने के साथ भी किसान इसकी खेती आसानी से कर सकते हैं।

### मक्के की खेती पर जोर

- संजय अवस्थी ने कहा कि 20 प्रतिशत का लक्ष्य प्राप्त करने के लिए मक्के का भी प्रयोग किया जाना जरूरी है। उन्होंने मक्के से एथनॉल की उत्पादन की प्रक्रिया तेज करने के लिए प्रयासों पर जोर दिए जाने की बात कही। कार्यक्रम में अनुराग गोयल, किरण डंगवाल, टी गिरी कन्नन, संदीप चिचबंकर, स्वप्निल शर्मा, बीनू पैनिकर, सोरराज ससि, अरिषा श्रीवास्तव, रविश्रीनिवासनी ने प्रमुख रूप से पेपर प्रस्तुत किया। इस दौरान सहायक प्रोफेसर डॉ. अनंतलक्ष्मी ने मीठे ज्वार के महत्व पर प्रकाश डाला।

## दैनिक जागरण

# अब गन्ना के विकल्पों से होगा एथेनाल का उत्पादन

जासं , कानपुर : राष्ट्रीय शर्करा संस्थान (एनएसआइ) में शुक्रवार को एथेनाल उत्पादन की स्थिरता पर आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में वक्ताओं ने कहा कि अब गन्ना के बजाय अन्य फसलों से एथेनाल उत्पादन करना होगा। देश में अभी पेट्रोल में 15 प्रतिशत एथेनाल मिलाया जा रहा है जबकि अगले साल से 20 प्रतिशत एथेनाल मिलाया जा सकेगा। तब मांग भी बढ़ेगी।

एनएसआइ और शुगर टेक्नोलाजिस्ट एसोसिएशन आफ इंडिया की ओर से शुक्रवार को राष्ट्रीय शर्करा संस्थान सभागार में संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संस्थान के निदेशक प्रो. डी. स्वाइन ने पेट्रोल के साथ एथेनाल मिश्रण को चीनी उद्योग के लिए क्रांतिकारी कदम बताया।

# Digital News

- Ethanol Production in Current Scenario
- रास्ट्रीय शर्करा संस्थान में इथोनाल पर अखिल भारतीय संगोष्ठी का आयोजन।
- 2025तक पेट्रोल में 20% इथेनॉल मिश्रण प्राप्त करने का लक्ष्य: गन्ने के मुकाबले चुकंदर से इथेनॉल ज्यादा मात्र में बना सकते हैं
- कानपुर नगर NSI एथेनॉल उत्पादन की स्थिरता पर एक अखिल भारतीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया
- इथेनॉल उत्पादन पर जोर, गन्ने के बाद चुकंदर और मक्के से उत्पादन की तैयारी